आईआईटी बीएचयू
दीक्षांत समारोह

मेडल पाकर चहके मेधावी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आईआईटी (बीएचयू) में शनिवार को 7वां दीक्षांत समारोह का आयोजन स्वतंत्रता भवन में किया गया। शुभारंभ मालवीयजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण और कुलगीत से हुआ। स्नातकों का 1191 मेधावियों को उपाधि प्रदान की गई।

मुख्य अतिथि डा. जी. सतीश रेड्डी और निदेशक प्रो. प्रमोद कुमार जैन ने छात्र-छात्राओं को मेडल और अवार्ड से सम्मानित किया। पुरस्कार वितरण का संचालन संस्थान के कुलसचिव डा. एसपी माथुर ने किया। इलेक्ट्रानिक अभियांत्रिकी के छात्र रामपाल सिंह ने सर्वाधिक 14 मेडल पाकर अपनी मेधा का परचम लहराया। रामपाल सिंह को बीटेक स्तर पर शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेसीडेंट्स स्वर्ण पदक से भी सम्मानित किया गया। केमिकल इंजीनियरिंग के मानस सिन्हा और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के अंकुश बसल सर्वाधिक सात-सात मेडल प्राप्त कर सफलता के शिखर तक पहुंचे। सिविल इंजीनियरिंग से अमन गुप्ता और मैकेनिकल इंजीनियरिंग से ठाकर पार्थ परेश को सर्वाधिक पांच मेडल मिले। माइनिंग इंजीनियरिंग में सर्वाधिक तीन मेडल आकाश चैरसिया और फार्मास्युटिकल्स इंजीनियरिंग में सर्वाधिक तीन मेडल जिल्ले अली को मिला। दो मेडल प्राप्त करने वालों में सिविल से राहुल वर्मा, मैकेनिकल के राहुल चांद, बलजिंदर कुमार बधान, कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग से शुभम चौधरी और मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग से अनित्य गुप्ता रहे। दीक्षांत समारोह में शैक्षणिक कार्य के अधिष्ठाता प्रो. एसके सिन्हा, अनुसंधान एवं विकास के अधिष्ठाता प्रो. राजीव प्रकाश, ज्वाइंट चीफ प्राक्टर प्रो. प्रभाकर सिंह, प्रो. पीके मिश्रा, प्रो. आरएस सिंह, प्रो. बी. मिश्रा, संस्थान और विवि के शिक्षक, अधिकारी, छात्र एवं उनके अभिभावक उपस्थित थे।

मेडल पाने वाले छात्रों की सूची

डायरेक्टर मेडल : अमोद हेगड़े (इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग)

प्रेसीडेंट व एक सिल्वर सहित 14 मेडल : राम पाल सिंह (इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग)

सात मेडल - मानस सिन्हा (केमिकल इंजीनियरिंग), अंकुश बसल (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग)

पांच मेडल - अमन गुप्ता (सीविल इंजीनियरिंग), ठाकर पार्थ परेश (मैकेनिकल इंजीनियरिंग)

तीन मेडल - आकाश चैरसिया (माइनिंग इंजीनियरिंग), जिल्ले अली (फार्मा इंजीनियरिंग)

दो मेडल पाने वाले छात्रों के नाम : राहुल वर्मा (सीविल इंजीनियरिंग), अरुण चांद (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), बलजिंदर कुमार बधान (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), शुभम चौधरी (कम्प्यूटर इंजीनियरिंग), अनित्य गुप्ता (मेटलर्जी इंजीनियरिंग)।

छह छात्राओं को मिला इंदिरा त्रिपाठी गोल्ड मेडल : तान्या मौर्य (केमिकल इंजीनियरिंग), श्रेया पांडेय (सिवील इंजीनियरिंग), ईशा अग्रवाल (कम्प्यूटर इंजीनियरिंग), रश्मि चंदोला (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग), सृष्टि शुक्ला (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), स्वाति राय (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग)

एक सिल्वर मेडल प्राप्त करने वाली छात्रा : मीनल बेहती (इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग)

एक स्वर्ण पदक पाने वाले छात्रों का नाम

अनुभा जोशी (बायो-केमिकल इंजीनियरिंग), भावना वर्मानी (बायो-मेडिकल इंजीनियरिंग), शैलेंद्र कुमार सिंह (सेरामिक इंजीनियरिंग), शुभि गुप्ता (केमिकल इंजीनियरिंग), आकृति मिश्रा (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग), प्रिया कुमारी (इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग), जयदीप कनोक मजूमदार (इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग), सुचित पांडेय (इंडस्ट्रियल मैनेजमेंट इंजीनियरिंग), कृष्ण कांत दुबे (मेटेरियल साइंस इंजीनियरिंग), संदीप (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), गौतम सिंह (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग), जय सिंह (माइनिंग इंजीनियरिंग), अमिताभ कुमार सिंह (सिस्टम इंजीनियरिंग), स्मृति गुप्ता (फार्मा इंजीनियरिंग), नमन कटाल (इंडस्ट्रियल केमिस्ट्री इंजीनियरिंग), अभिनव गुप्ता (एमटेक मैथमैटिक्स), मनुज कुमार सिंह (एमटेक इंजीनियरिंग फीजिक्स), कार्तिकेय गुप्ता (बायो-केमिकल इंजीनियरिंग), अभिनव डीआरपी (बायो-मेडिकल इंजीनियरिंग), लक्ष्य नरूला (सेरामिक इंजीनियरिंग), सैय्यद कासिम अब्बास (सिविल इंजीनियरिंग), कार्तिक मनचंदा (कम्प्यूटर इंजीनियरिंग), असीम गोसाईं (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग), इशिता व्यास (मेटेरियल साइंस इंजीनियरिंग), कार्तिका आहूजा (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), वर्णिता बाजपेयी (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग), आभास शिखर (माइनिंग इंजीनियरिंग), जूही सिंह (फार्मा इंजीनियरिंग), विरेंद्र त्यागी (सेरामिक इंजीनियरिंग), प्रखर दोरवार (सेशल इंजीनियरिंग), धीरज कुमार महतो (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग), मोहित गुप्ता (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग), रजनीश कुमार (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग)।

रेलवे को हल्के कोच निर्माण में आईआईटी दे रहा सहयोग : प्रो. जैन

वाराणसी (एसएनबी)। दीक्षांत समारोह के आरंभ की घोषणा संस्थान के निदेशक प्रो. प्रमोद कुमार जैन ने की संस्थान की उपलब्धि की आख्या पढ़ी। उन्होंने आईआईटी बीएचयू के शोधकार्यों की स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा कि रिसर्च एंड डेवलपमेंट के क्षेत्र में आईआईटी बीएचयू ने विगत एक वर्ष के भीतर चार अंतरराष्ट्रीय और छह राष्ट्रीय स्तर के एमओयू पर साइन किए हैं। जिसमें से जापान के साथ हाल ही में हस्ताक्षर हुआ। इस समय आईआईटी बीएचयू में 16.80 करोड़ के 112 प्रोजेक्ट चल रहे हैं। इनको 28 फेलो अपने अनुभव का सहयोग दे रहे हैं। यह अपने आप में बड़ी बात है कि हम 2015 में मदन मोहन मालवीय रेलवे चेयर के माध्यम से रेलवे को हल्के कोच के निर्माण में भी सहयोग कर रहे हैं। इसमें आईआईटी के मैटेरियल और मेटलर्जी विभाग रेलवे के इंजीनियर्स की मदद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज हमारे संस्थान में उच्च योग्यता के संकाय और रिसर्च स्कालर्स की देन है कि संस्थान में टिस्को, हिंडाल्को, ओएनजीसी, सेल, भेल, मेकॉन, एफसीआई, कोल इंडिया समेत यूएस, यूके सहित दुनिया की नामचीन एमएनसीज कैंपस के लिए आकर छात्र-छात्राओं की योग्यता पर उनको लेकर जा रही हैं। संस्थान में सीआईएफ, सीसीआईएस, डीआईएच, डीआईसी जैसी कोर विशेषीकृत कौशल और सुविधा का केंद्र विकसित हुआ है।

आईएएस, आईआईएम नहीं रिसर्च को बनाएंगे लक्ष्य : आमोद हेगड़े

डायरेक्टर्स मेडल हासिल करने वाले और टेलीकाम की 5जी कम्युनिकेशन में वायरलेस जर्नल थ्योरी प्लांट करने वाले इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग के 22 वर्ष के छात्र आमोद हेगड़े ने राष्ट्रीय सहारा को बताया कि मेरा लक्ष्य आईएएस और आईआईएम पर फोकस करना नहीं होगा। पहले वह यूएस फर्म निविडिया में दो साल जॉब पर फोकस के साथ रिसर्च पर केंद्रित करना चाहेगा। 26 दिसम्बर 1996 में अंधेरी (मुंबई) में जन्मे आमोद ने कहा कि डीआरडीओ में भी जाना उसके लक्ष्य का हिस्सा होगा।

एमटेक नाट इन द प्लान : रामपाल

बलिया के लहसनी गांव के 22 वर्ष के इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग के छात्र रामपाल सिंह ने कहा कि अभी पहला फोकस होगा भारत सरकार की कंपनी सीडॉट में लगी नौकरी पर, जिसमें दो से ती वर्ष तक की नौकरी करने के बाद यूएस जाकर हायर स्टडीज करूंगा। कहा कि एमटेक इज नाट इन द प्लान लेकिन कोर इलेक्ट्रानिक में ज्यादा झुकाव होने के कारण, रिसर्च और पीएचडी में जाने की ज्यादा संभावना है।

ब्रह्मोस को हाइपरसोनिक बनाने पर हो रहा है विचार

वाराणसी (एसएनबी)। आईआईटी बीएचयू में दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ चेयरमैन डा. जी सतीश रेड्डी ने कहा कि टेक्नोलॉजी में आगे बढ़ने के लिए इनोवेशन बहुत जरूरी है। एक इंजीनियर के तौर पर सोच हमेशा तार्किक होनी चाहिए। 21वीं सदी में तकनीकी के साथ-साथ इनोवेशन को लेकर चलने से ही देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। रूस ने अभी हाल ही में अपने हाईपर सोनिक मिसाइल अवानगार्ड का सफल परीक्षण कर सैना में शामिल किया। भारत भी इस दिशा में अपने बेड़े में स्टेट आफ आर्ट ब्रम्होस मिसाइल को हाइपर सोनिक बनाने का काम शुरू कर दिया है। हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल आकाश के लिए 87 प्रतिशत स्पेयर पार्ट्स भारतीय कंपनियां दे रही हैं। उन्होंने कहा कि जब डा. कलाम डीआरडीओ से जुड़े थे तब देश में डिफेंस में कुल 18 कंपनियां थी। मगर आज इस क्षेत्र में देश की 1000 कंपनियां काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि खुशी होगी कि जब डीआरडीओ और आईआईटी (बीएचयू) साथ मिलकर प्रदेश में रक्षा आधारित ज्यादा से ज्यादा उद्योग सृजित करें। डीआरडीओ ने कई क्षेत्रों में पूरे विश्व में शीर्ष 6 देशों में अपना स्थान बनाया है। हमने अग्नि 5, अर्जुन टैंक, ब्रह्मोस, आकाश आदि बनाया है। हमने विक्रांत जैसे हल्के टैंक और एयर क्राफ्ट लक्ष्य बनाकर नए आयाम स्थापित किये हैं। उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न सेक्टर में आयातित हो रहे तकनीकी के बारे में डा. जी सतीश रेड्डी ने कहा कि आईआईटी (बीएचयू) इस क्षेत्र के भविष्य को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान करे, जिससे हमें आयातित तकनीकों पर निर्भर न रहना पड़े। संस्थान के विद्यार्थी रिसर्च के क्षेत्र में भारत सरकार के स्टार्ट अप को अपनाकर इस तकनीकी अभाव को भर सकते हैं। यहां से निकलने वाले मेधावी अपनी क्षमता, रिसर्च और टेक्नोलॉजी का प्रयोग जब समाज व देश को आगे ले जाने में लगाएंगे तभी उनकी योग्यता की असली उपयोगिता सिद्ध होगी।

शताब्दी वर्ष में दीक्षांत भाषण देना गर्व की बात : अपने बीएचयू प्रवास का जिक्र करते हुए डा. रेड्डी ने कहा आज सुबह जब मैं इस अलौकिक परिसर में प्रवेश कर रहा था तो एकदम भिन्न मनःस्थिति में था। सोच रहा था कि यह वही परिसर है जिसकी स्थापना महामनाजी ने की है और जहां से निकलने वाले मेधावी भारत को विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान पथ पर ले आने में सहयोग किए। यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि संस्थान के शताब्दी वर्ष में दीक्षांत भाषण दे रहा हूं। इस शताब्दी वर्ष में संस्थान को यह तय करना होगा कि उन्हें तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करनी है।